Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

UG - Sem - IV - MJC - 07
Basic Concepts of Philosophy

"Branches of Philosophy."
(दर्शनशास्त्र की शाखाएँ)

"Philosophy may be defined as that science which makes a systematic study of the universe as a whole."

दार्शनिक चिन्तन की उत्पत्ति मनुष्य की उस स्वाभाविक जिज्ञासा से होती है जो उसे जीवन और जगत को समझने के लिए सदा उकसाती रहती है।

दार्शनिक उन सामान्य सिद्धान्तों की खोज करता है जो समूचे विश्व के लिए आधारभूत है, जो विश्व की सभी घटनाओं की व्याख्या करते हैं। जिन्हें जान लेने के बाद दुनिया एक पहेली नहीं रह जाती। दर्शन ऐसे सिद्धान्तों को प्रस्तुत करता है जो ज्ञाता के सामने जीवन और जगत का मूल्य स्पष्ट कर देते हैं। दर्शन हमें उन मूल्यों का ज्ञान कराता है जिनकी रक्षा हमारे जीवन का उद्देश्य है और उन रास्तों को बतलाता है जिनपर चलने से हम उन मूल्यों की रक्षा कर सकेंगे।

विज्ञानों के विवेचन की सुविधा के लिए दार्शनिक साहित्य का विभाजन समस्याओं के आधार पर किया है। विशेषप्रकार की समस्याओं

के समाधान में लगे दार्शनिक चिन्तन के लिए एक विशेष नाम दिया गया है। इस प्रकार से दर्शनशास्त्र की अनेक शाखाएँ हो जाती हैं, जो इसप्रकार हैं

1. तत्व-विज्ञान (Metaphysics or ontology)
2. विश्व-विज्ञान (Cosmology)
3. ईश्वर-विज्ञान (Theology)
4. प्रमाण-विज्ञान (Epistemology)
5. तर्क-विज्ञान (Logic)
6. नीति-विज्ञान (Ethics)
7. सौन्दर्य-विज्ञान (Aesthetics)
8. अर्घ-विज्ञान (Axiology)

दार्शनिक चिन्तन में ये शाखाएँ परस्पर सम्बद्ध रहती हैं।

1. Metaphysics – (तत्व-विज्ञान):– का शाब्दिक अर्थ है- वह विद्या जो भौतिक-विज्ञान के बाद है, तत्व विज्ञान दर्शन की वह शाखा है। जो विश्व के मूल तत्व या आदि कारण का अनुसंधान करती है। मूलतत्व को चरम सत्ता या पारमार्थिक सत्ता भी कहते हैं। पारमार्थिक सत्ता वह पदार्थ है जो विश्व का वास्तविक और अन्तिम आधार है; जिसके परे कुछ भी नहीं है जो स्वयं अपना आधार है

MARCH
M T W T F S S
31 1 2
3 4 5 6 7 8 9
10 11 12 13 14 15 16
17 18 19 20 21 22 23
24 25 26 27 28 29 30

और विश्व के सभी पदार्थों का पर्याप्त कारण है। चूँकि तत्व-विज्ञान मूलतत्व की खोज करता है इसके सिद्धान्त सार्वभौम होते हैं सभी पदार्थों के विषय में लागू होते हैं। इनकी व्यापकता सर्वाधिक होती है, इसलिए तत्व विज्ञान को उच्चतम व्यापकता का विज्ञान कहा जाता है।

मूल तत्व के अनुसंधान के सिलसिले में प्रश्न उठता है कि विश्व का प्रतीयमान स्वरूप ही इसका वास्तविक स्वरूप है या वास्तविक स्वरूप कुछ और है। क्योंकि हम देखते हैं कि सूर्य घूमता है और पृथ्वी स्थिर है किन्तु वास्तविकता इससे भिन्न है क्योंकि असलियत में पृथ्वी ही घूमती है और सूर्य स्थिर है। इन उदाहरणों के आधार अनुभव बतलाता है कि जो प्रतीत है जो दीखता है वही सदा वास्तविक या सत्य नहीं होता। वास्तविकता और प्रतीति की इस विषमता को देखकर दार्शनिक सोचने लगता है कि जगत प्रतीत मात्र है या सत्य है, सत्य और प्रतीति में क्या सम्बन्ध है, इत्यादि।

2. Cosmology –

विश्व-विज्ञान) – विश्व-विज्ञान में विश्व की भिन्न-भिन्न घटनाओं की समष्टिगत व्याख्या द्वारा संसार के सामान्य रूप

उत्पत्ति विकास आदि को समझने की चेष्टा की जाती है। इसके अन्तर्गत प्रश्न उठते हैं कि क्या किसी ने विश्व की सृष्टि की है या वह अपने आप प्राकृतिक नियमों के चलते बना है? वह इसका उत्तरोत्तर विकास होता है या वह स्थाई अपरिवर्तनशील है? क्या विश्व प्रक्रिया यान्त्रिक है या प्रयोजनशील है? देश और काल क्या है? क्या विश्व की कोई दैशिक, कालिक सीमा है, या वह अनन्त है? इत्यादि। इन प्रश्नों के समाधान में विश्व-विज्ञान तत्व-विज्ञान तथा भिन्न-भिन्न विशिष्ट विज्ञानों के निष्कर्षों की सहायता लेता है और विश्व के विषय में ऐसे सिद्धान्तों को प्रस्तुत करने की चेष्टा करता है जो इन निष्कर्षों से मेल खाते हों।

3. Theology -
(ईश्वर-विज्ञान) ईश्वर-विज्ञान का उद्देश्य मनुष्य की ईश्वर-विषयक जिज्ञासा को शांत करना है। हमारे अन्दर तरह-तरह के प्रश्न उठते हैं - ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं? यदि है तो इसका प्रमाण क्या है? यदि नहीं तो इसका प्रमाण क्या है?

यदि नहीं तो क्यों? यदि ईश्वर है तो उसका स्वरूप क्या है? ईश्वर और विश्व में क्या संबंध है? इत्यादि। ईश्वर का दार्शनिक विवेचन कर तत संबंधी प्रश्नों के समुचित समाधान की चेष्टा ईश्वर – विज्ञान में करते हैं।

4. Epistemology – (प्रमाण विज्ञान) प्रमाण विज्ञान का विषय ज्ञान है। ज्ञान का प्रश्न दर्शन के लिए बड़ा ही महत्वपूर्ण है इसलिए सभी शाखाओं को प्रमाण विज्ञान की सहायता लेनी पड़ती है। इसमें ज्ञान के स्वरूप, लक्ष्य विकास, ज्ञाता और ज्ञेय का संबंध, ज्ञान की सम्भावना, सीमा, उत्पत्ति, पद्धति, प्रामाणिकता आदि विषयों की छान-बीन की जाती है। इसके अन्तर्गत प्रश्न उठते हैं कि – ज्ञान का स्वरूप और उद्देश्य क्या है? ज्ञान के विकास की पद्धति क्या है? ज्ञान की प्रामाणिकता के लक्षण और आधार क्या है? इत्यादि।

ज्ञान मीमांसा को स्वतंत्र स्थान Des Cartes के युग में मिला है। आधुनिक युग में इसका विकास अन्य शाखाओं की अपेक्षा अधिक हुआ

है, यहाँ तक कि कुछ विज्ञान इसी को दर्शन का प्राण मानने लगे हैं।

5. Logic (तर्क-विज्ञान):-

तर्क विज्ञान का आधार निर्णय है। तर्क शास्त्र हमारे निर्णय वाक्यों का विश्लेषण कर उनकी सत्यता-असत्यता स्थिर करता है। इसके लिए वह उनके आधार और पद्धति की परीक्षा करता है। किसी निर्णय की सत्यता के लिए सत्य आधार की अपेक्षा है और सत्य आधार से भी तभी सत्य निर्णय प्राप्त हो सकता है जबकि निर्णय प्राप्त हो सकता है जबकि निर्णय प्राप्त करने की पद्धति सही है। निर्णय का स्वरूप उसका लक्षण, आधार और पद्धति आदि से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर तर्क-विज्ञान देता है।

6. Ethics (नीतिविज्ञान)

नीति विज्ञान नैतिक निर्णयों का अध्ययन कर नैतिक चेतना की युक्ति संगत व्याख्या करता है और उसकी सार्थकता स्थिर करता है। इस कार्य के सम्पादन के लिए उसे नैतिकता का मान दंड स्थिर करना पड़ता है क्योंकि सभी नैतिक निर्णयों का आधार कोई न कोई आदर्श या मापदंड रहता है। आदर्श के अनुकूल

7

होने से कोई कार्य कर्त्तव्य होता है और प्रतिकूल होने से अकर्त्तव्य। नीति विज्ञान व्यक्ति और समाज दोनों के कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विवेचन करता है और दोनों के लिए नैतिकता - अनैतिकता का माप दण्ड प्रस्तुत करता है। इस विषय में जितने प्रश्न होते हैं उन सबके समुचित समाधान की चेष्टा की जाती है।
जैसे - जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य क्या है? मनुष्य के कर्तव्य और अधिकार क्या-क्या हैं? कर्तव्य करने की योग्यता और स्वतंत्रता उसके अन्दर है या नहीं। इत्यादि।

7- Aesthetics (सौन्दर्य विज्ञान) सौन्दार्यानुभूति किसी-न-किसी मात्रा में सब को होती है, कोई न कोई चीज सबको सुन्दर लगती है इसी सौन्दार्यानुभूति का विश्लेषण कर सुन्दर असुन्दर की परख करना सौन्दर्य - विज्ञान का अभिप्रेत है। सौन्दर्य का स्वरूप महत्व उसकी वास्तविकता, सौन्दर्यानुभव का अन्य अनुभवों के साथ सम्बन्ध आदि का विवेचन यहाँ हम करते हैं। इस शाखा की समस्यायें इस प्रकार हैं-
सौन्दर्य - विषयक निर्णयों का आधार क्या है? सत्य और शिव के साथ

इसका क्या सम्बन्ध है।। इत्यादि।

Axiology (अर्घ विज्ञान)

इसके अन्तर्गत अर्घों या मूल्यों का विश्लेषण होता है। इसका विषय मूल्य विशेष नहीं बल्कि सामान्य है। इसलिए इसे मूल्यों का सामान्य विज्ञान कहा जाता है। मूल्यों का स्वरूप क्या है? विश्व के साथ उनका क्या सम्बन्ध है? उनका ज्ञान कैसे होता है? आदि विषयों का अन्वेषण अर्घ विज्ञान में होता है। जीवन में मूल्यों की उपयोगिता कदम-कदम पर होती है। व्यक्ति और समाज दोनों के जीवन की गति-विधि उन मूल्यों के अनुरूप होती है जिनमें उनकी आस्था रहती है। इसी सत्य की चेतना से अनुप्राणित होकर आधुनिक युग के बहुत से दार्शनिकों ने अर्घ-विज्ञान को अपने अध्ययन का विशेष क्षेत्र बनाया है। जिसके फलस्वरूप इसकी प्रगति दिनों दिन हो रही है।

ये सब शाखाएँ हैं दर्शनशास्त्र की जिनके परस्पर सहयोग से दर्शन की प्रगति हो रही है।